

8. “भामाशाह का देश-प्रेम”

प्यारे बच्चो, आपने चित्तौड़ के वीरों की अनेक कथाएं पढ़ी होंगी, आज हम ऐसे देश भक्त की कहानी पढ़ेंगे जिसने अपने तन-मन धन का बलिदान कर इतिहास में अपना अलग स्थान बनाया है। बात उस समय की है जब महाराणा प्रताप चित्तौड़ के राजा थे। एक लड़ाई में वे मुगल बादशाह अकबर से हार गये। स्वाभिमानी राणा अरावली पर्वत के वनों में भटक रहे थे। भूख-प्यास से सताये सैनिक व राणा का परिवार बहुत कष्ट झेल रहा था पर राणा को इस तुच्छ दुःख की कोई परवाह नहीं थी। सिर्फ चिन्ता थी, तो अपनी मातृभूमि को आजाद करवाने की-चित्तौड़ की पवित्र भूमि के उद्धार की।

अभावों से घिरे राणा के पास फूटी कौड़ी भी न थी। सेना के लिये हथियार, घोड़ों के लिए भोजन कहाँ से आए ? देश भक्त व अपनी आन के रक्षक राजपूत व भील सैनिक बिना वेतन के कार्य कर रहे थे पर भविष्य में कोई आशा की किरण दिखती नहीं थी। विवश होकर महाराणा प्रताप एक दिन अपनी जन्मभूमि से दूर जाने को तैयार हो गए, सैनिकों से विदा ली। रोते हुए सरदार व सेना को यूँ छोड़कर जाना उसके लिये भी बहुत मुश्किल था। अब तक ये दुःख-सुख के साथी थे। यह सोचकर राणा का हृदय भी वेदना से तड़प रहा था, तभी दूरी से घोड़ों की टापों की आवाज़ व उड़ती हुई धूल देखकर राणा थोड़ी देर ठहरे। उनके मंत्री भामाशाह घोड़ों से कूदे व महाराणा के पैरों पर गिरकर फूट-फूट कर रोने लगे। “आप अपनी जन्मभूमि को छोड़कर और हमें अनाथ बना कर नहीं जा सकते।” महाराणा प्रताप ने भामाशाह को उठाकर हृदय से लगाया और कहा, “आज भाग्य हमारे साथ नहीं। अब कुछ धन लेकर सेना को शक्तिशाली बनाकर ही लौटूँगा। ताकि जन्मभूमि का उद्धार कर सकूँ। तब तक आप सब धीरज रखें।” भामाशाह की आँखों में आँसू थे। उसने कहा, “राजन् मेरी एक छोटी-सी प्रार्थना सुन लीजिए।” राणा प्रताप स्नेह से बोले, “मन्त्री जी, कहिए मैंने आपकी बात कभी टाली है क्या ?”

भामाशाह के पीछे उनके सभी सैनिक अशर्फियों के थैले लिए हुए थे। भामाशाह ने राणा के चरणों में उन सारी अशर्फियों का ढेर लगा दिया और विनय पूर्वक कहा,

“महाराज यह सब धन आपका ही है, मेरे पूर्वजों ने भी आपका नमक खाया है। इसे आप स्वीकार करें व देश-उद्धार के पुनीत कार्य में लगाएं।”

महाराणा ने भामाशाह को गले लगाया व उनकी आँखों से आँसू टपकने लगे। धन्य है देश भक्त भामाशाह और उनका त्याग।

इन धन से महाराणा प्रताप ने सेना को इकट्ठा कर अकबर पर आक्रमण किया, इस बार जीत उनकी हुई, मातृभूमि को आजाद करवाने का सपना पूरा हुआ।

(अभ्यापकों के लिए)

ऐसे किसी अन्य देशभक्त का जीवन परिचय दीजिए।

*** अभ्यास ***

1. महाराणा प्रताप ने आजादी प्राप्त करने के लिए क्या-क्या कष्ट सहे ?
2. भामाशाह ने महाराणा प्रताप की सहायता किस प्रकार की और क्यों ?
3. भामाशाह ने महाराणा प्रताप की किन शब्दों में प्रशंसा की ?